BA Part - II

History Notes

By - Dr. Durga Bhawani

BA Part II History (Hons) IV Th Paper.

Q. नेपोलियन III की विदेश नीति का वर्णन करें।

Ans:— 1848 ई० की क्रांति के बाद नेपोलियन बोनापार्ट का भतीजा लूई नेपोलियन भारी मत से फ्रांस के द्वितीय गणराज्य का राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ। वह स्वयं को नेपोलियन बोनापार्ट का सच्चा उत्तराधिकारी बताता था और उसी के पद चिन्हों पर चल कर फ्रांस के गौरव को पुनः वापस लाना चाहता था। अगले चार वर्षों में वह अपना राजवंश कायम करने की तैयारी में लगा रहा और 1852 ई० में उसने गणराज्य को समाप्त कर अपने को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया और लूई नेपोलियन III हो गया।

विदेश नीति — देश के अन्दर नेपोलियन III को सबसे अधिक समर्थन कैथोलिक चर्च से मिला था। नेपोलियन III ने घोषणा की थी कि साम्राज्य का अर्थ शान्ति है लेकिन वह जानता था कि नेपोलियन का नाम एक गौरवपूर्ण परम्परा से जुड़ा हुआ था और जनता एक शक्तिशाली विदेश नीति चाहती थी। वह राष्ट्रीयता का समर्थक था। अतः स्वाभाविक था कि यूरोप के विभिन्न देश भक्त उस से सहायता की आशा करते थे।

पोप की सहायता — राष्ट्रपति पद प्राप्त करने के बाद ही नेपोलियन III ने पोप की सहायता के लिए सेना को रोम भेजा। सेना ने रोम को गणतंत्रवादी क्रांतिकारियों से मुक्त कर पोप को पुनः गद्दी पर बैठाया इस प्रकार शक्तिशाली विदेश नीति से फ्रांस के कैथोलिक और देश भक्त अत्यन्त खुश हुए।

क्रीमिया युद्ध — सम्राट बनने के बाद नेपोलियन III के लिए आवश्यक था कि वह नेपोलियन की परम्परा में गौरव प्राप्त करें जो केवल युद्ध में विजय द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था। अतः उसने जेरुसलम की चर्चों का प्रश्न उठाया। इन चर्चों का

प्रबंध लैटिन पादरियों के हाथों में था। लेकिन नेपोलियन महान की पराजय के बाद 1815 ई० से इसका प्रबंध ग्रीक आर्थोडाक्स पादरियों के हाथों में चला गया था। इस सम्प्रदाय का संरक्षक रूस का जार था। अतः जार ने फ्रांस की माँग का विरोध किया और तुर्की के सुलतान पर दबाव डाला कि चर्चों का प्रबंध ग्रीक आर्थोडाक्स पादरियों की हाथों में रहने दिया जाए। इस प्रकार चर्च प्रबन्धन के प्रश्न पर युद्ध शुरू हुआ। सच तो ये है कि रूस से युद्ध करके नेपोलियन III नेपोलियन महान की पराजय का बदला लेना चाहता था। 1853-54 में इंगलैंड और फ्रांस ने रूस से युद्ध किया जिसमें रूस की पराजय हुई। पेरिस में शांति सम्मेलन कर के नेपोलियन III ने फ्रांस का गौरव प्रदान की

रूमानिया के प्रति नीति – 1856 ई० में तुर्की साम्राज्य के दो प्रदेशों मोल्डेविया और वालेसिया को स्वायत्ता प्रदान की गई थी। 1859 में ये दोनों प्रान्त मिल कर एक हो गए और इस प्रकार रूमानिया की स्थापना हुई तथा नेपोलियन समर्थन से अंततः इस राष्ट्र को यूरोप ने स्वीकार कर लिया।

इटली के प्रति नीति – नेपोलियन III को इटली की राष्ट्रीय आकांक्षाओं से सहानुभूति थी, क्योंकि अपनी युवावस्था में वह कार्बोनरी का सदस्य भी रहा था। इटली के देश वासियों को उससे बहुत आशाएं थीं। उसके सहयोग से ही इटली का एकीकरण हो सका। मध्यवर्ती इटली के राज्यों को पीडमाण्ट में शामिल होना उसने स्वीकार कर लिया। इस सहायता के बदले उसने पीडमाण्ट से सेवाय और नीस प्राप्त किए जो इस नीति का अनैतिक पक्ष था।

पोलैण्ड के प्रति नीति- 1863 में पोलिस देशभक्तों ने रूस के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उनको आशा थी कि नेपोलियन III उनकी सहायता करेगा लेकिन नेपोलियन III ने ऐसा नहीं किया। रूस ने विद्रोह का दमन निर्दयता से किया इससे नेपोलियन की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा।

मैक्सिको नीति की असफलता - मैक्सिको ने ऋणों का भुगतान करना अस्वीकार कर दिया। इस पर ऋण दाता देश — इंगलैंड, फ्रांस, स्पेन ने मैक्सिको में सेनाएं भेज दीं। मैक्सिको ने ऋण चुकाने का वादा किया तब इंगलैंड और स्पेन ने अपनी सेनाएं वापस बुला लीं लेकिन फ्रांस ने अपनी सेनाओं को वापस नहीं बुलाया। अब उसका उद्देश्य साम्राज्यवादी था। वह आस्ट्रिया के सम्राट के भाई मैक्सिमिलियन को मैक्सिको का राजा बनाना चाहता था लेकिन फ्रांस का यह अभियान पूर्ण रूप से असफल हो गया। इससे नेपोलियन III की बहुत निंदा हुई।

जर्मन- आस्ट्रिया युद्ध - इस युद्ध में नेपोलियन III की नीति असफल हो गयी। प्रशा ने अति शीघ्रता से आस्ट्रिया को पराजित कर दिया। फ्रांस के राजनीतिज्ञों ने माना कि सेडोवा के युद्ध में आस्ट्रिया की नहीं बल्कि फ्रांस की पराजय थी। प्रशा के नेतृत्व में उत्तरी जर्मनी के एकीकरण को फ्रांस की विदेश नीति की असफलता मान कर युद्ध की माँग होने लगी लेकिन नेपोलियन III ने शांतिपूर्ण नीति को कुशलता से बनाए रखा।

स्पेन का प्रश्न और फ्रांस-जर्मनी युद्ध - 1868 ई० में स्पेन का सिंहासन खाली हो गया। स्पेन के सैनिक नेताओं ने जर्मनी के एक राज्य होहेनजोलर्न-सिंगमेरिन के राजकुमार लियोपोल्ड को राजा बनाने का प्रस्ताव किया। राजकुमार ने प्रस्ताव

अस्वीकार कर दिया। फिर भी, फ्रांस में इतनी तेज उत्तेजना थी कि फ्रांस-जर्मनी युद्ध आरंभ हो गया। इस युद्ध में फ्रांस पराजित हुआ और जर्मन सेनाओं ने नेपोलियन III को बन्दी बना लिया।

नेपोलियन III का पतन – सम्राट को बन्दी होने का समाचार पाते ही पेरिस में क्रांति हो गयी। पेरिस की भीड़ ने विधान सभा को घेर लिया। इसके बाद ही फ्रांस में गणतंत्र की घोषणा कर दी गई। इस प्रकार नेपोलियन III ने गद्दी खो दिया और अन्त में इंग्लैंड में एक प्रवासी के समान जीवन बिताया।

निष्कर्ष – नेपोलियन III ने फ्रांस में शासन स्थापित करने में सफलता प्राप्त की लेकिन उसका शासन मात्र 12 वर्ष के अल्पकाल में ही समाप्त हो गया। इसका मुख्य कारण यह था कि फ्रांस निरंकुश शासन स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। दूसरी बात, नेपोलियन III ने शांति और युद्ध दो विरोधी नीतियों का संचालन किया जो असंभव कार्य था। इसके अतिरिक्त इटली और जर्मनी के प्रति नीतियों ने उसकी शक्ति को दुर्बल कर दिया।

वास्तव में, उसने जिन नीतियों का संचालन किया, उनको पूरा करने की क्षमता तथा योग्यता उसमें नहीं थी।